″नागालैंड से वृहत्तर नागालैंड की ओर“!

द्वारा

मोहन गुरूस्वामी

टी.मुवियाह और इसाक सू के नेतृत्व में बैकाक आधारित नागालैंड के राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन (NSCN) के दल की, नई दिल्ली में उच्चतम राजनीतिक अधिकारियों के साथ बातचीत एक गुप्त सम्मेलन में किसी अज्ञात सलि पर आमने–सामने हुयी, यह प्रसन्नता का विषय है। वर्मा के नागा नेता खाप्लांग के नेतृत्व में NSCN के एक अन्य दल के भी इस प्रक्रिया में षामिल होने की अब उम्मीद की जा रही है। यह सचमुच में एक सफलता है पर अतीत में भी हम ऐसी सफलताएँ प्राप्त कर चुके हैं। नागा जनजातियों से संबंधित हमारी अधिकतर समस्याएँ, स्वयं द्वारा पैदा की हुई हैं। और ऐसा इस ढोंग को बरकरार रखने के लिए किये गए अनुचित दावे और हमारी अज्ञानता का परिणाम है कि स्वतंत्र भारत का ब्राह्मण राज ब्रिटिष राज का उत्तराधिकारी है। जो कि ब्रिटिष प्रषासकों और अमेरिकन मिषनरियों द्वारा पोषित पृथक्कता की अनुभूति है।

नागा समस्या को अच्छी तरह जानने के लिए सबसे पहले भारत को कुछ प्रमुख ऐतिहासिक तथ्यों को स्वीकार करना चाहिए। इनमें से पहला (तथ्य) यह है कि (इस) उप–महाद्वीप में नागा पहाड़ियाँ सबसे अंत में ब्रिटिष अधिकार में आयीं। इस कब्जे की षुरूआत मार्च 1878 ई. में कोहिमा क्षेत्र में मुख्य प्रषासनिक केन्द्र की स्थापना से हुई, बाद में विषाल अंगामी गाँव बना। यह 1949 में पूर्ण हुआ जब भारत की नयी सरकार ने अपने अधिकार क्षेत्र दुएनसांग तक फैला लिया। इससे पहले नागा प्रजातियाँ केंद्रिय षक्तियों से स्वतंत्र थीं चाहे वह असम की हो, वर्मा की हो या भारत की। इस प्रकार

यह, जम्मू–कष्मीर से पूरी तरह अलग है जो कि ऐतिहासिक रूप से भारत की राजनैतिक–सांस्कृतिक वातावरण का हमेषा एक आंतरिक भाग था।

नागा जनजातियाँ सामान्यतः तिब्बत–बर्मन कुल की मानी जाती हैं जो कि सिंधु–गंगा के मैदानों और प्रायद्वीपीय भारत के लोगों से नृजातीय रूप में बिल्कुल भिन्न है। नागालैंड के भूतपूर्व मुख्यमंत्री और बाद में हिमाचल प्रदेष के गवर्नर होकीषे सेमा के अनुसार नागा जनजातियों को वर्गों में बाँटना कठिन है। सेमा अपनी पुस्तक "इमरजेस ऑफ नागालैंड" में लिखते हैं कि गारो को तिब्बती जाति से जोड़ा जा सकता है, खासी को थाई और कम्बोडियन से संबंधित करके मंगोलियन से और मिजो को बर्मा के चीन्स से जोड़ा जा सकता है पर नागा जनजातियाँ सामान्य वर्गीकरण(नामकरण) का विरोध करती हैं। वे आगे लिखते हैं कि "ऐसा इस कारण है कि नागा लोग संयुक्त नहीं हैं और उनमें बहुत सारी अलग–अलग विषिष्ट जनजातियाँ हैं, लगभग प्रत्येक प्रजाति का अपना अलग भाषा समूह होने के कारण उनके बीच 30 से अधिक (उप भाषाएँ) प्रचलित है। इसके अलावा उनकी सांस्कृतिक और सामाजिक व्यवस्था एक जनजाति से दूसरी जनजाति में अत्यधिक बदल जाती है। यहाँ तक कि उनका षारीरिक संगठन और रंग रूप भी समुदाय और स्थान बदलने के साथ बदल जाता है। इनके नामकरण में "नागा" नाम बाहरी लोगों द्वारा दिया गया है।"लोक भाषा नागामी अभी भी हिन्दी के पर्याप्त पुट के साथ असमी और अंग्रेजी के मिश्रण से विकसित है। इसके बिना आम लोग एक–दूसरे से जनसंपर्क नहीं कर सकते। बिल्कुल स्पष्ट है कि–साझा नागा अस्तित्व की बात करते हुए एक राष्ट्रीयता का दावा करने के लिए कोई ठोस आधार नहीं है।

तीसरा और संभवतः सबसे महत्वपूर्ण कारक नागा पहाड़ियों में इसईयत का तीव्र प्रसार होना है। पहले धर्मप्रचारक वहाँ 1836 में गए थे जब रेवरेन्ड माइल्स ब्रोन्सन ने नामसंग(जो अब अरूणाचल प्रदेष के तीरप अनुमंडल में है) में मिषन स्थापित किया था लेकिन इसाईयत को वास्तविक प्रोत्साहन एक अमेरिकन बपतिस्त मिषनरी, रेवरेन्ड ई. डब्ल्यू. क्लार्क के आगमन के बाद मिला। क्लार्क का प्रयास(उस समय) रंग लाया जब

उन्होंने 1872 ई. में नौ नागाओं का बपतिस्मा करने में सफलता प्राप्त की। तब से बपतिस्मा करने वालों ने पीछे मुड़कर नहीं देखा और आज 800 से अधिक चर्च चल रहे हैं और नगाओं की सबसे अधिक संख्या इसाईत में विष्वास रखती है। जबकि यह जानना आवष्यक है कि मिषनरियों ने आधुनिक स्वास्थ्य और षिक्षा सुविधाओं को स्थापित करने में पथ प्रदर्षक की भूमिका निभाई । नागा जनजाति में नयी चेतना जगाने और एकता की भावना को पैदा करने में बपतिस्मा करने वाली चर्च की भूमिकाओं के बारे में हमें अनभिज्ञ नहीं रहना चाहिए।

इस एकता को षुरूआती मदद ब्रिटिष अधिकारियों के अप्रत्यक्ष प्रोत्साहन के साथ–साथ 1918 में नागा क्लब की स्थापना के द्वारा प्राप्त हुयी। इसके सदस्यों में प्रमुख ग्राम प्रधान, सरकारी अधिकारी और षिक्षित नागा थे, जिनमें भारतीय विष्वविद्यालयों से हाल तक के निकले स्नातक भी षामिल होते थे। इसकी सदस्यता प्रदान करने के बाद षीघ्र ही नागा क्लब ने राजनीतिक अधिस्वर प्राप्त कर लिया और स्थानीय आकांक्षाओं को प्रकट करने का साधन बन गया। इस प्रकार जब 1929 में साइमन कमीषन ने इस क्षेत्र का दौरा किया तो नागा क्लब ने निवेदन किया कि ”हम प्रार्थना करते हैं कि हमें उन लोगों की दया का पात्र न बनाया जाए जो स्वयं हमें कभी भी नहीं जीत सके और जिनके अधीन हम कभी नहीं रहे बल्कि हमें प्राचीन समय की तरह स्वनिर्धारण करने के लिए स्वतंत्र प्राप्त छोड़ दिया जाय।“ इसलिए जब भारत ने अपनी स्वतंत्रता प्राप्त की तो उन्होंने अपनी स्वाधीनता को वापस लौटाने की माँग की।

इस प्रकार यह पूर्णतः स्पष्ट है कि यद्यपि उन्हें अंग्रेजी षासन स्वीकार्य था तथापि वे स्वतंत्र भारत का भाग नहीं बनना चाहते, तब भी नहीं जब यह एक लचीले संविधान के साथ प्रजातंत्र बना जो व्यक्तिगत और सामूहिक स्वतंत्रता की गारंटी देता था। जब लेफ्टीनेंट जनरल रेन्या मुटागुची की जापनी 15वीं सेना ने 7 मार्च 1944 को अपना आक्रमण कर दिया तब द्वितीय विष्वयुद्ध अंततः भारत आ ही गया। काबा घाटी के समानान्तर यह आक्रमण इम्फाल में लड़खड़ा गया जहाँ विख्यात चार भारतीय विभाजन

संपन्न हुआ। तीन माह के लंबे समय तक भारत का भाग्य मणीपुर के जंगली पर्वतश्रेणियों पर झूल रहा था जहाँ दो महान सेनाएँ उग्रता और क्रुरता से युद्ध कर रही थीं। नागाओं ने संयुक्त सेना को भरपूर सहयोग दिया। फिल्ड मार्षल सर विलियम स्लीम ने "डिफिट इन्टू विक्टरी" में लिखा कि "बहादुर नागा जिनकी वफादारी कभी विचलित नहीं हुयी। उन्होंने हमारे सैनिकों का मार्गदर्षन करते थे, सूचनाएँ इकट्ठा करते थे, षत्रु टुकड़ियों पर घात लगाकर हमला करते थे, हमारी खाद्य सामाग्रियों को ढोते थे और हमारे घायलों को भारी गोली—बारी के बीच लाते—ले जाते थे और तब भी, जैसा कि भद्रपुरूष करते हैं अक्सर वे कोई भी भुगतान (पैसा) लेने से इंकार कर देते थे।" यह स्वैच्छिक वफादारी इस उम्मीद से प्रेरित थी कि ब्रिटिष स्वतंत्रता की उनकी माँग का समर्थन करेंगे।

हालांकि संयुक्त सेना मुख्यतः भारतीय सैनिकों से बनी हुई थी पर भारत का बहुमत और संवेदना स्पष्ट रूप से सुभाष चंद्र बोस निर्मित भारतीय राष्ट्रीय सेना के साथ थी जो जापानियों के साथ लड़ रहे थे और मणीपुर के मोयरंग के एक छोटे से गाँव में भारत की मुख्य भूमि पर पहली बार आजादी का तिरंगा लहराया था। और सबसे बड़ी विडंबना यह रही कि एकमात्र महत्वपूर्ण नागा जिसने जापानियों का समर्थन किया था वह ए.जेड.फीजो था जिसने बाद में स्वतंत्र भारत से स्वतंत्रता पाने के लिए झंडा उठाया था।

अप्रैल 1945 में जापानियों की हार के बाद 1937—47 के बीच नागा पहाड़ियों के ब्रिटिष उपायुक्त रहे सर चार्ल्स पॉसे के सक्रिय प्रोत्साहन के फलस्वरूप सभी नागा जनजातियों को मिलाने के उद्देष्य से नागा पहाड़ी जिला जनजातीय काउंसिल की स्थापना हुयी। बाद के वर्षों में यह नागा नेषनल काउंसिल(NNC) हो गया। बाद की सभी राजनीतिक नागा पार्टियों की जननी इस काउंसिल(NNC) की षुरूआती आकांक्षा संभवतः असम से स्थानीय स्वायत्तता पाना था। लेकिन 6 दिसम्बर 1946 को NNC के सचिव टी. अलीबा इम्टी ओ ने कोहिमा में एक जनसभा को संबोधित करते हुए सभी

नागा जनजातियाँ के एकीकरण का आह्वान किया और स्वतंत्रता की माँग उठाई। यह संभव है कि(इस माँग के पीछे) ब्रिटिष षासन के षीघ्र ही प्रस्थान की सूक्ष्म समझ की भूमिका रही हो।

1954 के नागा विद्रोह ने एक बार फिर से भारतीय सेना के उस क्षेत्र में प्रवेष का सामना किया। यह दुखद है कि 'आतंकवाद को खत्म करने' के भारतीय सेना के बाद अधिकतर अविवेकी और कभी–कभी आतंक और विनाष के विधिहीन आंदोलनों में विकृत हो गए। यह आतंकवाद को कुचलने में भले हीं सफल हो गयी हो लेकिन परायेपन की भावना को अत्यधिक तीव्र कर दिया। ईष्वर की कृपा से आज की भारतीय सेना ने इससे अच्छा सबक लिया और विषेष रूप से आतंकवाद प्रभावित क्षेत्रों में मानव अधिकारों के प्रति भारतीय जनता की राय भी काफी संवेदनषील है।

जहाँ सषस्त्र सेना अपने अनुभवों से सीख ले चुकी है, वहीं हमारा राजनीतिक और नौकरषाही नेतृत्व कुछ भी सीख लेता प्रतीत नहीं होता न ही (अपने में) कोई कभी देखता है। दिस.1963 में नागलैंड के निर्माण के बाद से हमने एक के बाद एक कई राजनीतिक समझौतों को भुगता है। परिणामस्वरूप नागा पहाड़ी क्षेत्र के नागालैंड और मणिपुर में प्रतिव्यक्ति विकास पर, राष्ट्र का सर्वाधिक पैसा खर्च करने के बावजूद कुछ थोड़े बहुत दिखावे को छोड़ कर वहाँ की सरकारें सर्वाधिक लापरवाह और भ्रष्ट रही हैं। उस क्षेत्र के लिए सुरूचि और भावनाओं का खयाल रखते हुए सावधानी के साथ चुने हुए अधिकारियों की गौरवमयी भारतीय सीमावर्त्ती प्रषासनिक सेवा (IFAS) को हमने बगैर सोचे–समझे विघटित कर दिया।

हमारी समस्यओं के बड़ा(संयुक्त) होने का कारण इस क्षेत्र का वर्मा के समीप होना है। इसने न केवल लंबे समय तक वैध कंद्रिय प्रमुख का विरोध किया है बल्कि विद्रोह से त्रस्त(विदीर्ण) भी है और विष्व में हिरोइन का सबसे बड़ा उत्पादक स्थान(केन्द्र) है। बाह्य संसार के लिए इम्फाल कोहिमा और दीमापुर एक बड़े हिरोइन जनपथ के

आर–पार फेला हुआ है। नारकोटिक्स और आतंकवाद के साथ–साथ होना बहुत बुरा होता है लेकिन अब हमें उस क्षेत्र में एक और बड़े लत की समस्या का सामना करना पड़ रहा है जो सूइयों के अविवेकी प्रयोग से पैदा हुआ है इसने नागालैंड और मणिपुर को (एड्स) HIV के एक दुर्दम्य भँवर में फँसा दिया है।

भारत की दीर्घकालीन सुरक्षा चिंता और हमारी सीमाओं के साथ लगे हुए वर्मा के क्षेत्रों में चीनी प्रभाव के विस्तार के कारण(फलस्वरूप) नागा पहाड़ियों में हमारी मिलिटरी एवं प्रषासनिक उपस्थिति समान रूप से आवष्यक है, जो एक सामान्य स्थिरता लाती है। इनका जवाब केवल नयी एवं नवपरिवर्तित राजनीतिक एवं प्रषासनिक व्यवस्था में ही मिल सकता है जो न केवल नागा जातियों की संस्कृति को प्रभावित करता है बल्कि नागा पहाड़ियों के भूगोल को भी निर्मित करता है। भारतीय संविधान के धारा 371 A जरूर कुछ रक्षा का उपाय करती है लेकिन स्पष्ट रूप से ये पर्याप्त नहीं हैं। लेकिन मणिपुर राज्य को धारी और इसकी प्रमुख मिती जनसंख्या को मात्र इसलिए छोड़ने के लिए विकृत करना कि नागालैंड विषाल नागालैंड या 'नागलिमे' बन सके निष्चय ही एक बड़े नागलिमे, जो वर्मा का विभाग होगा, का बीज बोना है। दक्षिणभिमुख भाग में चीन के हस्तक्षेप को अब भारत–वर्मा सीमा पर 'मोरे' के पार 'तामू' में भी भौतिकरूप से देखा जा सकता है। यह नया राजनीतिक मानचित्र भारत के हित में नहीं होगा।

मेहन गुरूस्वामी

Email: mguru@satyam.net.in